



जोबनेर कृषि



फरवरी 2022

वर्ष : 7

अंक : 2

प्रति अंक मूल्य 25 रूपये

वार्षिक शुल्क : 250 रूपये



प्रसार शिक्षा निदेशालय

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय

जोबनेर, जिला-जयपुर (राज.) 303 329

गर्भावस्था पशुओं एवं नवजात बछड़ों की वैज्ञानिक रूप से देखभाल

¹दीपक चन्द मीना, ²डॉ.अक्षिता चड्ढा, ¹नेहा सिंह एवं ¹डॉ. बी. एस. मीणा

राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल (हरियाणा)

¹गुरु अंगद देव पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, लुधियाना (पंजाब)

पशुपालन में मुख्य रूप से गाय और भैंस का पालन किया जाता है भारत भैंस एव गायों की जनसंख्या क्रमश 192.5 व 109.9मिलियन है। भारत कही सालो से दूध उत्पादन में पुरे विश्व भर में प्रथम स्थान पर है। 2019-20 के आकड़ो के अनुसार 198.4मिलियन टन है। परन्तु दुग्ध उत्पादकता प्रति पशु विश्व की औसत दुग्ध उत्पादकता की तुलना में काफी कम है। जिसका प्रमुख कारण पशुओ के रहने का खराब प्रबंधन, संतुलित आहार में कमी, खुले चारागाह की कमी के कारण पशुपालक अपने पशुओ को बाड़े में ही बांधे रखते है। जिसकी वजह से उसके स्वास्थ्य, प्रजनन क्षमता और उसकी दुग्ध उत्पादकता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

किसी भी डेयरी फार्म की सफलता उसके बछड़ों-बछियों के उचित प्रबंधन पर निर्भर करती है। बछड़ों-बछियों के प्रारंभिक जीवन में बेहतर पोषण उनके तेजी से विकास और जल्दी परिपक्वता के लिए बहुत ही ज्यादा फायदेबंद रहता है। बछड़ों-बछियों के अनुपयुक्त पोषण के कारण पहले ब्यांत में अधिक उम्र और पूरे जीवन काल की उत्पादकता में कमी हो जाती है बछड़े भविष्य की डेयरी का निर्माण करते हैं। दूध उत्पादन व्यवसाय में बछड़ों की स्थापना करना सबसे मुश्किल काम है, जिसके लिए प्रबंधन कौशल, अनुप्रयोग और लगातार ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

गर्भावस्था के दौरान गाय भैंसों की देखभाल

गर्भधारण से गाय भैंसों के ब्याने तक के समय को गर्भकाल कहते हैं। भैंस में गर्भकाल 310-315 दिन व गाय में 280-285 दिन तक का होता है। पशुओ में मदचक्र का बन्द हो जाना ही गर्भधारण की पहली पहचान है परन्तु कुछ भैंसों में शान्त मद होने के कारण गर्भधारण का पता ठीक प्रकार से नहीं लग पाता। अतः गर्भाधान के 21 वें दिन के आसपास भैंस को दोबारा मद में न आना गर्भधारण का संकेत माना है। गर्भधारण की अच्छी और विश्वनीयता के लिए पशुपालको को गर्भाधान के दो महीने के बाद पशु चिकित्सा द्वारा जाँच करवा

लेना ठीक रहता है। गाभिन भैंस को अपने जीवन यापन व दूध देने के अतिरिक्त बच्चे के विकास के लिए भी पोषक तत्वों और ऊर्जा की आवश्यकता होती है। गर्भावस्था के अंतिम तीन महीनों में बच्चे की सबसे अधिक वृद्धि होती है इसलिए भैंस को आठवें, नवें और दसवें महीने में अधिक पोषक आहार की आवश्यकता पड़ती है। इसी समय भैंस अगले ब्यांत में अच्छा दूध देने के लिये अपना वजन बढ़ाती है तथा पिछले ब्यांत में हुई पोषक तत्वों की कमी को भी पूरा करती है। अतः गर्भावस्था के समय भैंस को संतुलित एवं सुपाच्य चारा खिलाना अति चाहिए। अच्छे आहार के लिए दाने में 40-50 ग्राम खनिज लवण मिश्रण अवश्य मिलाना चाहिए। अगर पशुओ के गर्भवस्था के दौरान पौष्टिक आहार में कमी रहने से निम्नलिखित परेशानियाँ हो सकती हैं।

1. बच्चा कमजोर पैदा होता है तथा उसके अंधे होने की संभावना भी रहती है।
2. भैंस फूल दिखा सकती है
3. प्रसव उपरांत दुग्ध ज्वर हो सकता है
4. जर रूक भी सकती है
5. बच्चे दानी में मवाद पड़ सकती है तथा ब्यांत के बाद दूध उत्पादन में भी काफी कमी आ सकती है।

गाय भैंसों ब्याने के बाद का प्रबंधन

पशु के थन और लेवटी को गुनगुने पानी में एंटीसेप्टिक डालकर धोना चाहिए और एक साफ तौलिया से साफ करना चाहिए। लेवटी से दबाव दूर करने के लिए गाय का दूध दुहा जा सकता है। यदि जन्म पर बछड़े को दूध छुड़ाने (वीनिंग) का अभ्यास नहीं किया जाता है तो गाय और बछड़े को 10 दिनों के लिए कैल्विंग पेन में रहने देना चाहिए। लेकिन, यदि जन्म पर दूध छुड़ाने का अभ्यास किया जाता है, तो बछड़े को तुरंत हटा लेना चाहिए। जिन गायों में मातृ-वृत्ति अधिक है और बछड़े का दूध छुड़ाने की समस्या है तो उन गायों की आंखों को ढक कर ही बछड़े को गाय से दूर हटाना चाहिए।

नवजात बछड़े की देखभाल

जन्म के तुरंत बाद हमें नवजात बछड़े के नाक से कफ (बलगम) को दूर करने में सहायता करनी चाहिए और बछड़े को एक साफ तौलिया के साथ पोंछते हुए सुखाना चाहिए। बछड़े का सही सांस लेना सुनिश्चित करना चाहिए। बछड़े की नाभि को शरीर से 2-3 सेंटीमीटर छोड़कर साफ कैंची से काट कर आयोडीन की टिंचर जैसी एंटीसेप्टिक लगानी चाहिए

ताकि नाभि के माध्यम से संक्रमण के प्रवेश को रोका जा सके।

कोलोस्ट्रम (खीस) खिलाना

माँ के पहले दूध को कोलोस्ट्रम कहते हैं। इसमें बड़ी मात्रा में गामा ग्लोब्युलिन होते हैं जो गाय द्वारा अपने जीवन के दौरान एंटीजन के खिलाफ निर्मित एंटीबॉडी हैं। इन एंटीबॉडिज का अवशोषण प्रारंभिक जीवन में बछड़े को कई बीमारियों के खिलाफ निष्क्रिय रोगक्षमता प्रदान करता है। इसके अलावा, कोलोस्ट्रम सामान्य दूध से सात गुना प्रोटीन और दोगुना ठोस पदार्थ वाला पोषक तत्वों का एक बहुत महत्वपूर्ण स्रोत है। इस प्रकार यह प्रोटीन और ठोस सेवन को जल्दी बढ़ावा देता है। इसमें विटामिन और खनिजों की सामान्य से अधिक मात्रा है। जब एक बछड़ा पैदा होता है तो इसमें कोई एंटीबॉडी और विटामिन-ए नहीं होते, जो रोग से निपटने के लिए आवश्यक हैं।

कोलोस्ट्रम खिलाने का समय

कोलोस्ट्रम की पहली खुराक जीवन के पहले 15-30 मिनट में और दूसरी खुराक लगभग 10-12 घंटों बाद बहुत उपयोगी हो सकती है।

कोलोस्ट्रम खिलाने की मात्रा

एक बछड़े को पहले 3 दिनों के दौरान कोलोस्ट्रम दिया जाना चाहिए। बछड़ों को खिलाए जाने वाले कोलोस्ट्रम की मात्रा उनके शरीर के पर निर्भर करती है। भारतीय परिस्थितियों में 5 दिनों के लिए शरीर के वजन के 1/10 भाग कोलोस्ट्रम खिलाने की सिफारिश की गई है। दूध को पिलाने से पहले उबालकर शरीर के तापमान 39 डिग्री सेल्सियस तक ठंडा किया जाना चाहिए।

बछड़े का प्रशिक्षण:

1. दूध छुड़ाए हुए बछड़ों को बर्तन में दूध पीने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए ताकि खाने का प्रबंधन आसान हो।
2. आम तौर पर क्रॉसब्रेड बछड़े बर्तन या निपल से दूध पीना जल्दी सीख जाते हैं।
3. उबले हुए और ठंडे दूध की निर्धारित मात्रा दूध के बर्तन या निपल में डालकर बछड़े के पास ले जानी चाहिए।
4. पशु-परिचर को अपने दो उंगलियों, सूचकांक और मध्य उंगलियों को सफाई के बाद दूध में डुबोकर बछड़े के मुंह के करीब रखना चाहिए।

5. बछड़ा दूध को चखने के बाद उंगलियों को चूसना शुरू कर देगा।
6. धीरे-धीरे उंगलियों को बर्तन तक लाकर दूध में डुबो देना चाहिए।
7. जब बछड़ा दूध के एक या दो मुंह ले ले तो उंगलियों को हटा लेना चाहिए।
8. इस प्रक्रिया को तब तक दोहराया जा सकता है जब भी बछड़ा दूध पीने से रुक जाए और अपना सिर ऊपर उठा ले।
9. भैंस के कटड़ों के प्रशिक्षण के लिए धैर्य और प्रयासों की आवश्यकता होती है।

दूध प्रतिस्थापन (मिल्क रिप्लेसर)

इसमें मूल रूप से स्किम दूध पाउडर और चरबी या वनस्पति वसा होते हैं। ग्लूकोज, सोयाबीन आटा और अनाज के आटे का एक छोटा-सा हिस्सा भी कुछ खनिजों और विटामिनों के साथ जोड़ा जा सकता है। मिल्क रिप्लेसर जन्म के दूसरे सप्ताह से ही शुरू किया जा सकता है।

काफ स्टार्टर

ये सूखा अनाज मिश्रण बछड़ों को शुरू में खिलाया जाता है। बछड़े जन्म के दूसरे सप्ताह से सूख स्टार्टर की एक छोटी मात्रा खाना शुरू देते हैं। एक काफ स्टार्टर ऊर्जा (75 प्रतिशत टीडीएन) और प्रोटीन (14-16 डीसीपी) में उच्च होना चाहिए। काफ स्टार्टर को मुफ्त-विकल्प के आधार पर खिलाया जा सकता है जब तक कि बछड़ा प्रतिदिन 1-1-5 किग्रा स्टार्टर मिश्रण का उपभोग शुरू न करे, जिसके बाद यह मात्रा प्रतिबंधित की जा सकती है। आम तौर पर बछड़ों को इस स्तर तक पहुँचने में से महीने लग जाते हैं। जब बछड़ा नस्ल के अनुसार प्रतिदिन 0.4-0.5 किलो सूखा अनाज मिश्रण खाना शुरू कर दे तो बछड़े को दूध पिलाना जल्द से जल्द बंद किया जा सकता है।

3 महीने से 6 महीने तक बछड़े का खानपान

एक बार जब बछड़ा 2-3 महीने की उम्र तक पहुँच जाता है तो बछड़े की मृत्यु दर की सबसे जोखिम भरी अवधि और सबसे महंगे खानपान का समय बीत चुका होता है। अब इस अवधि में मध्यम गुणवत्ता वाला चारा और सरल अनाज मिश्रण पशुओं को खिलाया जा सकता है। सामान्यतः एक बछड़े को एक किलो अनाज मिश्रण प्रतिदिन प्रति 100 किलो शरीर के वजन के अनुसार खिलाया जाना चाहिए।

वीनिंग (अलग करना / दूध छुड़ाना)

बछड़े को अपनी माँ से अलग करके उसका विकास करना वीनिंग कहलाता है। इस व्यवस्था के तहत, गाय द्वारा उसके बछड़े को जन्म से ही दूध नहीं पिलाने दिया जाता। इसके बजाय, गाय का पूरा दूध निकालकर बछड़े को आवश्यक मात्रा में संपूर्ण दूध या मलाई निकाला हुआ दूध पिलाया जाता है।

लाभ

1. बछड़ों को दूध एक निर्धारित मात्रा में पिलाया जा सकता है।
2. किसी विशेष ब्यात में गाय द्वारा निर्मित दूध की सटीक मात्रा दर्ज की जा सकती है।
3. स्वच्छ दूध का उत्पादन किया जा सकता है।
4. गाय के ज्यादा दूध पिलाने से बछड़े में होने वाले दस्त को रोकता है।
5. बछड़े की मृत्यु के बाद भी गायों का दूध देना जारी रहता है।

कृषि उड़ान योजना

डॉ. पी.एस. शेखावत, सहायक आचार्य (कृषि अर्थशास्त्र विभाग) एवं सोनू जैन सहायक आचार्य, (कृषि अर्थशास्त्र विभाग)

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर

कृषि उड़ान योजना को आरम्भ करने के घोषणा केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण जी ने केंद्रीय बजट 2020-21 पेश करते हुए की है। इस योजना के अंतर्गत किसानों को कृषि उत्पादों के परिवहन में सहायता (Farmers will be assisted in transportation of agricultural products) दी जायेगी। इस कृषि उड़ान योजना 2021 के तहत देश के किसानों की फसलों को विशेष हवाई विमानों के जरिये एक स्थान से दूसरे स्थान तक समय (Farmers' crops will be transported from one place to another special airplanes on time.) पर पहुंचाया जायेगा। इस योजना के अंतर्गत दूध, मछली, मास आदि अन्य खराब होने वाली चीजों को हवाई माध्यम से जल्द से जल्द बाजार पहुंचाया जायेगा। जिससे किसानों की फसले समय से बाजार में पहुंचे जा सकेंगी। जिसकी वजह से किसानों को अपनी फसल के अच्छे दाम प्राप्त होंगे। इस योजना को इंटरनेशनल, नेशनल रूट पर और नागरिक उड़ान मंत्रालय की सहायता से शुरू (This scheme will be started on the international, national route and with

the help of the ministry of Civil Aviation) किया जायेगा। कृषि उड़ान योजना 2021 के तहत केंद्र, राज्य सरकारों और हवाई अड्डे के संचालकों से रियायत के संदर्भ में वित्तीय प्रोत्साहन चुनिंदा एयरलाइंस को दिया जा रहा है।

कृषि उड़ान योजना 2021 का उद्देश्य:—

- जैसे की आप लोग जानते है कि ज्यादातर कृषि पर ही निर्भर रहते है। कृषि उनकी आय का साधन होती है। किसानों की फसल की पैदावार की अच्छी कीमत प्रदान करने के लिए ही सरकार ने इस योजना को शुरू किया गया है।
- इस योजना के जरिये किसानों की आय को दुगुना करना।
- इस योजना 2021 के जरिए किसानों की उत्पादकों को सीधे बाजार तक पहुंचाने में उपयोग किया जाएगा।
- इस योजना के जरिये किसान खेती के माध्यम से अच्छे से जीवन व्यतीत कर सके। इस योजना का लाभ देश के सभी किसानों को प्रदान किया जायेगा। कृषि उड़ान योजना 2021 के जरिये न केवल देश में किसानों की फसलों को बचाया जायेगा बल्कि विदेशों में भी किसानों की फसलों की पैदावार पहुंचेगी।
- किसानों की फसलों को समय से मंडी पहुंचा कर उन्हें उचित दाम प्रदान किये जायेगे।

कृषि उड़ान योजना का कार्यान्वयन:—

कृषि उड़ान योजना के अंतर्गत किसानों को सब्सिडी हवाई सेवाएं प्रदान की जाएंगी। यह योजना अंतरराज्य तथा अंतरराष्ट्रीय दोनों मार्गों पर लागू की जाएगी। इस योजना के अंतर्गत आधी सीटें किसानों को रियायती दरों पर प्रदान की जाएंगी। व्यवहारता फंडिंग के नाम से किसानों को एक निश्चित मात्रा में राशि प्रदान की जाएगी। इस राशि को केंद्र सरकार तथा राज्य सरकार दोनों प्रदान करेंगी।

कृषि उड़ान योजना 2021 की पात्रता तथा महत्वपूर्ण दस्तावेज :—

- इस योजना के अंतर्गत आवेदन करने के लिए आवेदक को भारत का स्थाई निवासी होना अनिवार्य है।
- आवेदक किसान होना चाहिए।

- आधार कार्ड ।
- खेती संबंधित दस्तावेज ।
- निवास प्रमाण पत्र ।
- आय प्रमाण पत्र ।
- राशन कार्ड ।
- मोबाइल नंबर ।

कृषि उड़ान योजना 2021 ऑनलाइन आवेदन कैसे करे?

- देश के जो इच्छुक लाभार्थी इस योजना का लाभ उठाना चाहते हैं तो आप नीचे दिए गए तरीक को फॉलो करे ।
- सबसे पहले आपको कृषि विभाग की ऑफिसियल वेबसाइट पर जाना होगा। ऑफिसियल वेबसाइट पर जाने के बाद आपके सामने होम पेज खुल जायेगा ।
- इस होम पेज पर आपको ऑनलाइन आवेदन का ऑप्शन दिखाई देगा। आपको इस ऑप्शन पर क्लिक करना होगा। विकल्प पर क्लिक करने के बाद आपके सामने अगला पेज खुल जायेगा ।
- इस पेज पर आपको रजिस्ट्रेशन फॉर्म दिखाई देगा। आपको इस रजिस्ट्रेशन फॉर्म में पूछी गयी सभी जानकारी जैसे नाम, आधार नंबर आदि भरनी होगी ।
- सभी जानकारी भरने के बाद आपको सबमिट के बटन पर क्लिक करना होगा। बटन पर क्लिक करने के बाद आपका रजिस्ट्रेशन पूरा हो जायेगा ।

पोर्टल पर लॉगइन करने की प्रक्रिया:-

- सर्वप्रथम आपको कृषि विभाग की आधिकारिक वेबसाइट पर जाना होगा ।
- अब आपके सामने होम पेज खुल कर आएगा ।
- होम पेज पर आपको लॉगइन के लिंक पर क्लिक करना होगा ।
- आपके सामने लॉगइन पेज खुल कर आएगा। जिसमें आपको अपना यूजरनेम, पासवर्ड तथा कैप्चा कोड दर्ज करना होगा ।

- इसके पश्चात आपको लॉगिन के लिंक पर क्लिक करना होगा ।

समर्क जानकारी :-

हमने अपने इस लेख के माध्यम से आपको कृषि उड़ान योजना से संबंधित सभी महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान कर दी है। यदि आप अभी भी किसी प्रकार की समस्या का सामना कर रहे हैं। तो आप <http://agriculture.gov.in/> लिंक पर क्लिक करके संबंधित विभाग से संपर्क करके अपनी समस्या का समाधान कर सकते है।

मूली की वैज्ञानिक खेती से अधिक उपज कैसे प्राप्त करे

कमल महला विद्यावाचस्पति शौधार्थी छात्र (उद्यान),
श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, जयपुर-
303329 (राजस्थान)



जड़ वाली सब्जियों में मूली एक महत्वपूर्ण एवं शीतलता प्रदान करने, ठंडी तासीर, कब्ज दूर करने एवं भूख बढ़ाने वाली सब्जी है। इसका उपयोग सलाद, अचार तथा कैण्डी बनाने के लिए किया जाता है। पीलिया, बवासीर और जिगर के रोग में इसका प्रयोग अत्यधिक लाभप्रद है। इसमें विटामिन 'ए' और 'सी' तथा खनिज लवण, फॉस्फोरस, पोटेशियम, कैल्शियम इत्यादि पाये जाते हैं।

मूली की खेती पूरे भारत में की जाती है। इसकी जड़ों के साथ-साथ इसकी हरी पत्तियाँ भी सलाद व सब्जी के रूप में प्रयोग की जाती हैं। इसकी खेती पूरे वर्ष की जाती है। इसका उत्पादन मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल, बिहार, पंजाब, आसाम, हरियाणा, गुजरात, हिमाचल प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश में किया जाता है।

जलवायु

एशियाई मूली अधिक तापमान के प्रति सहनशील है, लेकिन अच्छी पैदावार के लिए ठंडी जलवायु उत्तम होती है। ज्यादा तापमान पर जड़ें कठोर तथा चरपरी हो जाती हैं। यह ठंडे मौसम की फसल है। इसकी बढ़वार हेतु 10 से 15° सेल्सियस तापमान होना चाहिए। अधिक तापमान पर जड़ें कड़ी तथा कड़वी हो जाती हैं।

भूमि की तैयारी

इसकी खेती प्रायः सभी प्रकार की मृदा में की जा सकती है। बलुई दोमट और हल्की दोमट भूमि में जड़ों की बढ़वार अच्छी होती है। मटियार भूमि खेती के लिए अच्छी नहीं मानी जाती है। भूमि का पी-एच मान 6.5 के निकट अच्छा माना जाता है। मूली की खेती करने के लिए गहरी जुताई की आवश्यकता होती है, क्योंकि इसकी जड़ें गहराई तक जाती हैं। अतः गहरी जुताई करके मिट्टी भुरभुरी बना लेते हैं।

उन्नत किस्में

एशियाई किस्में (फरवरी से सितंबर तक)

काशी श्वेता, काशी हंस, अर्का निशांत, जापानी व्हाइट, पूसा रेशमी, पूसा चेतकी, पूसा देशी, हिसार मूली नं. 1, कल्याणपुर 1, जौनपुरी एवं स्थानीय किस्में।

यूरोपियन किस्में (अक्टूबर से फरवरी तक)

व्हाइट आइसकिल, रेपिड रेड व्हाइट, टिप्ड स्कारलेट, ग्लोब एवं पूसा हिमानी।

खाद एवं उर्वरक

मूली शीघ्र तैयार होने वाली फसल है। अतः मिट्टी में पर्याप्त मात्रा में खाद व उर्वरक का होना अत्यंत आवश्यक है। अच्छी पैदावार के लिए एक हैक्टेर खेत में 20 से 25 टन अच्छी प्रकार सड़ी हुई गोबर की खाद या कम्पोस्ट, बुआई से 25 से 30 दिनों पूर्व प्रारंभिक जुताई के समय खेत में मिला देनी चाहिए। इसके अतिरिक्त 50 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 25 कि.ग्रा. फॉस्फोरस और 25 कि.ग्रा. पोटैश प्रति हैक्टेर की दर से देने की आवश्यकता पड़ती है। नाइट्रोजन की आधी मात्रा एवं फॉस्फोरस और पोटैश की पूरी मात्रा शेष बुआई से पहले खेत में डाल देनी चाहिए। आधी नाइट्रोजन की मात्रा बुआई के 20 दिन बाद शीतोष्ण किस्मों में और 25 से 30 दिन बाद एशियाई किस्मों में टॉपड्रेसिंग के रूप में दें, परंतु ध्यान रहे कि उर्वरक पत्तियों के ऊपर न पड़े। अतः यह आवश्यक है कि यदि पत्तियाँ गीली हों तो छिड़काव न करें।

बीज दर

एशियाई किस्मों में 6 से 8 कि.ग्रा. और यूरोपियन किस्मों में 8 से 10 कि.ग्रा. बीज प्रति हैक्टेर की दर से आवश्यक होती है।

बुआई का समय

उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्रों में एशियाई मूली बोने का मुख्य समय फरवरी से सितंबर तथा यूरोपियन किस्मों का अक्टूबर से जनवरी तक होता है। पहाड़ी क्षेत्रों में बुआई मार्च से अगस्त तक की जाती है।

बुआई

बुआई के समय खेत में नमी अच्छी तरह से होनी चाहिए। खेत में नमी की कमी होने पर पलेवा करके खेत तैयार करते हैं। इसकी बुआई या तो छोटी-छोटी समतल क्यारियों में या 30 से 45 सें.मी. की दूरी पर बनी मेड़ों पर करते हैं। यदि क्यारियों में बुआई करनी हो तो 30 सें.मी. के अंतराल पर कतारें बना लें और उन कतारों में बीज बोयें। मेड़ों पर बीज 1 से 2 सें.मी. गहराई पर लाइन बनाकर बोते हैं। मेड़ों पर बुआई करने से जड़ें अच्छी बनती हैं। बीज जमने के बाद पौधों की दूरी 6 से 7 सें.मी. रखते हैं। यदि पौधे घने हों तो उन्हें उखाड़ देना चाहिए।

सिंचाई

वर्षा ऋतु की फसल में सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है, परंतु गर्मी कि फसल की 4 से 5 दिनों के अंतराल पर सिंचाई अवश्य करते रहना चाहिए। शरदकालीन फसल में 10 से 12 दिनों के अंतर पर सिंचाई कि आवश्यकता पड़ती है। मेड़ों पर सिंचाई हमेशा आधी मेड़ ही करनी चाहिए ताकि पूरी मेड़ नमीयुक्त व भुरभुरी बनी रहे। इससे जड़ों की बढ़वार में सुगमता होती है।

अंतःसस्य क्रियाएं

यदि खेत में खरपतवार उग आये हो तो आवश्यकतानुसार उन्हें निकालते रहना चाहिए। रासायनिक खरपतवारनाशक जैसे स्टाम्प 3 कि.ग्रा. 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेर की दर से बुआई के 48 घंटे के अंदर प्रयोग करने पर प्रारंभ के 30 से 40 दिनों तक खरपतवार नहीं उगते। निराई-गुड़ाई 15 से 20 दिनों बाद करके मिट्टी चढ़ा देनी चाहिए। मूली की जड़ें मेड़ से ऊपर दिखाई दे रही हों तो उन्हें मिट्टी से ढक दें अन्यथा सूर्य के प्रकाश के संपर्क से वे हरी हो जाती हैं। इससे बाजार भाव तो घटता ही है साथ-साथ खाने में भी अच्छी नहीं लगती हैं।

खुदाई तथा बाजार के लिए तैयारी

मूली की सदैव नरम और कोमल अवस्था में ही खुदाई करनी चाहिए। खुदाई एक तरफ से न करके तैयार जड़ों को छांटकर करनी चाहिए। इस प्रकार 10 से 15 दिनों में पूरी खुदाई करते हैं। बाजार में ले जाने से पूर्व उखड़ी हुई मूली की जड़ें पानी से अच्छी तरह धोकर साफ कर लें। मोटी व पतली मूलियों का बंडल अलग-अलग बनाकर केवल हरी मुलायम पत्तियों को छोड़कर पीली व पुरानी पत्तियों को तोड़कर

निकाल देना चाहिए।

मूली की उपज

मूली की पैदावार, इसकी किस्में, भूमि, खाद व उर्वरक तथा अंतःसस्य कृषि क्रियाओं के ऊपर निर्भर करती है। एशियाटिक या बड़ी किस्मों की औसत उपज 250 से 400 क्विंटल बुआई के 35 से 50 दिनों में और छोटी किस्मों या यूरोपियन मूली की उपज 100 से 150 क्विंटल प्रति हैक्टर बुआई के 20 से 25 दिनों के बाद प्राप्त होती है।

पॉलीहाउस में खीरा उत्पादन से मिली अच्छी आय : डालुराम बना मालदार

कृषक का नाम

डालुराम मेघवाल

गांव

खूड, पं.सं—
दांतारामगढ, जिला—
सीकर

उम्र

35 वर्ष

मोबाइल नम्बर

7427096265

शिक्षा

स्नातक

जमीन

1.8 हैक्टेयर

पुर्व में आमदनी

3.00 लाख

वर्तमान आमदनी

7.00 लाख

नवाचारी कदम

उच्च तकनीकी से
सब्जी उत्पादन



पॉलीहाउस पॉलीथिन से बना एक रक्षात्मक छायांदार घर है जिसमें बेमौसम में अधिक आय देने वाली सब्जियों की खेती करके आजकल किसान भाई अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं। पॉलीहाउस में हाईटेक बागवानी की तकनीक से जलवायु को नियंत्रित कर बेमौसमी सब्जियों की उन्नत खेती की जाती है। गर्मी के मौसम में पॉलीहाउस को ठंडा करने के लिए दोनों तरफ से पर्दे को उठा दिया जाता है और फव्वारा व ड्रिप सिंचाई का उपयोग कर उसे मौसम के अनुकूल बना दिया जाता है, जबकि ठंड के दिनों में पर्दा गिरा दिया जाता है। इससे पॉलीहाउस के अंदर तापमान बढ़ जाता है। इस प्रकार किसान बेमौसमी सब्जियों व फूलों की खेती करके अधिक मुनाफा कमा सकते हैं। इसके साथ ही तापमान नियंत्रण, आर्द्रता के साथ-साथ कार्बनडाइऑक्साइड, मृदा तापमान, पादप पोषक तत्व आदि को नियंत्रित किया जाता है, ताकि वांछित सब्जी फसलों का वर्षभर उत्पादन लिया जा सके। नियंत्रित जलवायु

और मृदा परिस्थितियों से पॉलीहाउस में उगायी गयी सब्जी एवं फूलों की उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है।

पॉलीहाउस के लिए सरकार द्वारा देय अनुदान :

पॉलीहाउस बनाने के लिए कम से कम 1000 वर्गमीटर जमीन चाहिए। 2000 वर्गमीटर तक पॉलीहाउस बनाने के लिए उद्यान विभाग के माध्यम से किसानों को कुल लागत का 50 प्रतिशत तक अनुदान सरकार देती है, वहीं नेटहाउस के लिए कम से कम 500 वर्गमीटर जमीन चाहिए। इसके लिए भी 50 प्रतिशत तक अनुदान सरकार देती है। किसान पहले से पॉलीहाउस बनाकर खेती कर रहे हैं और वह क्षतिग्रस्त हो गया है तो उसकी मरम्मत के लिए 75 प्रतिशत अनुदान दिया जाता है।

- इसी योजना का फायदा लेकर डालुराम मेघवाल ने अपने खेत में 4000 वर्गमीटर क्षेत्रफल में पॉलीहाउस बनाकर खेती कर लाखों रुपये कमा रहे हैं।
- यह सफलता की कहानी राजस्थान के सीकर जिले के युवा कृषक श्री डालुराम मेघवाल, खूड गांव निवासी की है। यह पढा-लिखा और मेहनतकश युवा कृषक है। दांतारामगढ पंचायत समिति के गांव खूड, गांव निवासी युवा कृषक ने वैज्ञानिक सोच से कृषि आय को दोगुना नहीं बल्की तीन गुना बढ़ाकर सबको चौंका दिया। यह सब कृषि विज्ञान केन्द्र, फतेहपुर के तकनीकी सहयोग तथा उद्यान विभाग के राष्ट्रीय बागवानी मिशन के वित्तीय सहयोग से ही संभव हो पाया। वर्ष 2017-18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, फतेहपुर द्वारा गांव में आयोजित किये गये विभिन्न प्रदर्शनों एवं कृषक प्रशिक्षणों के दौरान वैज्ञानिकों से सम्पर्क एवं चर्चा से प्रेरणा लेकर इन्होंने कुछ नई कृषि तकनीकी से सब्जी उत्पादन करके आय बढ़ाने का सोचा। बागवानी में अच्छी आमदनी देखकर इसने केन्द्र के विशेषज्ञों की सलाह से पॉलीहाउस में खीरा व अगेती सब्जी उत्पादन तकनीकी" शुरू किया। साथ ही कृषक का गांव सीकर शहर के पास होने के कारण होटलों में तथा शादियों में खीरा की अच्छी मांग रहने से 0.4 हैक्टेयर जमीन पर बने पॉलीहाउस में खीरा व अगेती सब्जी उत्पादन करके 6.00 लाख तक शुद्ध मुनाफा कमा रहे हैं। तथा इस पॉलीहाउस में परिवार के लोगो को रोजगार देने के साथ ही गांव के 2 युवाओं को भी रोजगार दे रहे हैं।

सारणी :- पॉलीहाउस में खीरा उत्पादन से प्राप्त आय-व्यय का विवरण -

फसल	बोया गया क्षेत्रफल	पैदावार (किलो) (हैक्टर)	औसत बाजार भाव (रु. किलो)	प्राप्त आय (रु.)	कुल व्यय (रु.)	शुद्ध मुनाफा (रु.)
खीरा	0.4	32000	24/-	7,68,000.0	1,72,000.0	5,96,000.0

सकल शुद्ध लाभ = 6 लाख प्रतिवर्ष मात्र पॉलीहाउस से प्रगतिशील कृषक डालुराम मेघवाल गांव के दूसरे कृषक साथियों को भी पॉलीहाउस में खीरा व अगेती सब्जी उत्पादन को अपनाने के लिए प्रेरित कर रहे है।



आलेख एवं सम्पादन

डॉ. बी.एल. आसीवाल, सहायक आचार्य,

प्रसार शिक्षा निदेशालय, जोबनेर

डॉ. महेश चौधरी और डॉ. लालाराम

उद्यान वैज्ञानिक एवं सस्य वैज्ञानिक कृषि विज्ञान केन्द्र, फतेहपुर

डॉ. रमेश चन्द आसीवाल,

सहायक आचार्य, कृषि अर्थशास्त्र

कृषि महाविद्यालय, लालसोट- दौसा

प्रमुख संरक्षक	:	प्रो. जे.एस. सन्धु
संरक्षण	:	डॉ. सुदेश कुमार
समन्वयक	:	डॉ. (श्रीमति) राजेन्द्रा राठौड़
प्रधान सम्पादक	:	डॉ. के.सी. कुमावत
तकनीकी परामर्श	:	डॉ. महेश दत्त
		डॉ. एम.आर. चौधरी
		डॉ. आर.पी. घासोलिया
		डॉ. डी.के. जाजोरिया
संकलन एवं सम्पादक	:	डॉ. सन्तोष देवी सामोता



निदेशक की कलम से

फरवरी माह में कृषि कार्य

प्रिय किसान भाईयों,

गोहूँ की फसल में गांठ बनते समय तथा बालीयाँ आने के समय (बुवाई के 70 दिन बाद) व जौ में दुधिया अवस्था पर सिंचाई करें। गोहूँ व जौ की फसल में जस्ते की कमी के लक्षण दिखाई देने पर 5 किगा. जिंक सल्फेट का 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। गोहूँ व जौ की खड़ी फसल में दीमक नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोरोप्रिड 17.8 एस.एल.400 मि.ली या फिप्रोनिल 5 एस सी 3 लीटर प्रति हैक्टेयर सिंचाई के साथ दें। लहसुन एवं प्याज की फसल में पर्णजीवी (श्रीप्स) के नियंत्रण हेतु डाइमिथोएट 30 ई.सी. या मिथाइल डेमेटोन 25 ई-सी- का एक मिली. प्रतिलीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें। बैंगन चकता रोग व तुलासिता रोग के नियंत्रण के लिए फसल पर मेंकोजेब 75 प्रतिशत डब्ल्यू. पी 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करें। जायद मूंग की बुवाई के लिये आई. पी. एम. 02-03, पूसा बैसाखी, आर.एम.जी.-62 किस्में बोयें। ग्रीष्मकालीन मिर्च एवं टमाटर की नर्सरी तैयार करें। बुवाई पूर्व बीजो को केप्टान 2 ग्राम प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित करें एवं नर्सरी में 8 से 10 ग्राम कार्बोफ्यूरोन 3 जी प्रति वर्गमीटर के हिसाब से मिलावें। प्याज की रोपाई के 30-45 दिन बाद फसल में 50 किलोग्राम नत्रजन प्रति हैक्टेयर दें तथा सिंचाई करें। नींबू में केन्कर रोग की रोकथाम के लिये बोर्डोमिश्रण (4:4:50) या स्ट्रेप्टोसाइक्लीन 300-400 मिलीग्राम दवा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। पपीते में तना गलन की रोकथाम हेतु उचित जल निकास की व्यवस्था करें। केप्टान या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 2 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में मिलाकर जड़ों में डालें। नवजात बछड़े -बछड़ियों को अन्तः परजीवीनाशक दवाई पशुचिकित्सक की सलाहनुसार दें। दुधारू पशुओं को थनैला रोग से बचाने के लिये दूध पूरा व मुट्टी बांध (फुल मिल्कींग) कर निकालें। पशुशाला की प्रतिदिन अच्छी सफाई करें।

बुक पोस्ट

डाक टिकट

पत्रिका सम्बन्धी आप अपने सुझाव, आलेख एवं अन्य कृषि सम्बन्धी नवीनतम जानकारियाँ हमारे मेल jobnerkrishi@sknau.ac.in पर भेजे।

प्रकाशक एवं मुद्रक निदेशालय, प्रसार शिक्षा, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर के लिए हरिहर प्रिन्टर्स, जयपुर से मुद्रित।